

संपादकीय नई दिल्ली से आइची-नागोया तक भारत की यात्रा

विपक्षी खेमों से लगातार शक

जिस प्रक्रिया से 13 करोड़ से ज्यादा मतदाताओं के नाम काटे गए हैं, उस पर तीन में से दो निर्वाचन आयुक्तों का भी भरोसा नहीं रहा, तो नई मतदाता सूची की क्या विश्वसनीयता होगी ? मतदाता सूची की विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया (एसआईआर) को जिस तरह आगे बढ़ाया गया, उस पर निर्वाचन आयोग के भीतर गहरे मतभेद थे। निर्वाचन आयुक्तों एस.एस. संधू और विवेक जोशी ने 10 महीनों के दौरान 14 बार अपनी गंभीर आपत्तियाँ दर्ज कराईं। एक अंग्रेजी अखबार की खोजी रिपोर्ट के मुताबिक इन आपत्तियों के तहत उन दोनों सदस्यों ने मतदाता सूची से नाम काटने और जोड़ने में मामले में उनको अंधेरे में रखने, एन वोटरों को जोड़ने की 'अधिकृत' प्रक्रिया अपनाने, तथा राज्यों के अधिकारियों को नजरअंदाज करते हुए एस.एस. अधिकार 'दिल्ली में केंद्रित' करने की शिकायत की। उन्होंने वोटर सॉफ्टवेयर की साख़ पर चिंता जताई। यहाँ तक कि अपनी शिकायतों को लेकर उन्होंने कैबिनेट सचिव का दरवाजा खटखटाया। रिपोर्टों ने साफ़ कर दिया है कि एसआईआर को लेकर सार्वजनिक दायरों में जो संदेह और एतराज हैं, उन्हें आयोग के अंदर भी जताया गया। निर्वाचन आयोग के अंदर मतभेद के मामले पहले भी सामने आए हैं, लेकिन जिस तरह पर एसआईआर के मामले में हुआ, वह अभूतपूर्व है। इसका अर्थ है कि सबकी आपत्तियों को ठुकराते हुए मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बुद्धोजी अंदाज में इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया है। ऐसा वे कैसे कर पाए और इसकें लिए उन्हें कहाँ से ताकत मिली, इस पर अब स्वाभाविक कयास लगाए जाएंगे। जिस प्रक्रिया से 13 करोड़ से ज्यादा मतदाताओं के नाम काटे गए हैं, कई जगहों पर सॉफ्टवेयर की गड़बड़ों से वैध नाम काटने के तथ्य सामने आए, और एन वोटर शामिल करने की प्रक्रिया पर विपक्षी खेमों से लगातार शक जताए गए, उस पर तीन में से दो निर्वाचन आयुक्तों का भी भरोसा नहीं रहा, तो आखिर नई मतदाता सूची की क्या विश्वसनीयता रहेगी ? और क्या इनके आधार पर होने वाले चुनावों पर आम जन का यकीन बना रहेगा ? ये अत्यंत गंभीर प्रश्न हैं। इसलिए इस पूरी मशक़त को पलटने की ज़रूरत है। नई सूची रद्द कर पुरानी सूची अविलंब बहाल की जानी चाहिए। एसआईआर अगर ज़रूरी है, तो अब यह अनिवार्य हो गया है कि पहले इसकी प्रक्रिया पर सबको भरोसे में लेकर इसे दोबारा संपन्न किया जाए।

आलेख

सेवा की कहानी : नोनी सुरक्षा योजना से खिरमेन को बच्चों के भविष्य का मिला भरसा



सेवा संकल्प अधिध्यान के तहत 'सेवा की कहानी' में शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से परिवारों को मिल रहे सामाजिक एवं आर्थिक संबल की तस्वीर प्रस्तुत आ रही है। सरगुजा जिले के आधिकारपुर विकासखंड के ग्राम पंचायत कतकालो निवासी श्रीमती खिरनेन यादव के लिए नोनी सुरक्षा योजना बच्चों के भविष्य को लेकर आर्थिक सुरक्षा का भरोसा लेकर आई है। योजना की जानकारी उन्होंने अंगनवाड़ी कार्यकर्ता के माध्यम से मिली। जानकारी मिलने के बाद उन्होंने आवश्यक प्रक्रिया पूरी कर योजना के लिए आवेदन किया।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की जानकारी
से योजना तक पहुंच आसान हुई

खिरमेन यादव बताती हैं कि पहले उन्हें नोनी सुरक्षा योजना के बारे में जानकारी नहीं थी। आंनम्बाडी केंद्र में कार्यकर्ता ने उन्हें योजना के प्रावधानों, मिलने वाले लाभ और आवेदन प्रक्रिया की जानकारी दी। कार्यकर्ता के मार्गदर्शन से उन्होंने आवश्यक फॉर्म भरकर योजना के लिए आवेदन किया। समय पर मिली जानकारी उनके लिए शासन की योजना तक पहुंचने का माध्यम बनी।

बच्चों के भविष्य को लेकर अब
मिला आर्थिक सुरक्षा का भरोसा

योजना से जुड़ने के बाद खिरमेन को अपने बच्चों के भविष्य से जुड़ी जरूरतों को लेकर भरोसा मिला है। उनका कहना है कि अपने बच्चा समय में योजना के माध्यम से मिलने वाली आर्थिक सहायता बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने और परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने में सहायक होगी। इससे बच्चों के भविष्य को लेकर उनकी चिंता पहले की तुलना में कम हुई है। खिरमेन यादव कहती हैं कि आंगनबाड़ी दीदी से नौनी सुरक्षा योजना की जानकारी मिली। इसके बाद फॉर्म भरकर योजना के लिए आवेदन किया। अब भरोसा है कि भविष्य में मिलने वाली सहायता बच्चों के काम आएगी। आंगनबाड़ी केन्द्र महिलाओं और बच्चों को पोषण एवं अन्य सेवाएं उपलब्ध कराने के साथ पात्र परिवारों तक शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। खिरमेन यादव की कहानी बताती है कि सही समय पर मिली जानकारी परिवारों की योजनाओं से जोड़ने और भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा का भरोसा देने में महत्वपूर्ण कड़ी बन सकती है। खिरमेन यादव ने जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से परिवारों को मिल रहे सहायों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त किया।

विचार-पक्ष

रायपुर, गुरुवार 08 अक्टूबर 2026

एशियाई खेल 2026 एक नजर में

एशियाई खेल, जिसे एशियाड के नाम से भी जाना जाता है, एशिया की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता है, जो हर चार साल में एक बार आयोजित की जाती है। वे एशिया ओलंपिक परिषद (ओसीए) द्वारा आयोजित किए जाते हैं और इसमें वर्तमान में 45 भागीदार देश या क्षेत्र हैं। 20वें एशियाई खेल 19 सितंबर से 4 अक्टूबर, 2026 तक जापान के आइची-नागोया में आयोजित किए जाएंगे थे। एक एशिया की कल्पना आधिकारिक नारा था। इससे पहले तोक्यो (1958) और हिरोशिमा (1994) में हुए एशियाई खेलों के बाद तीसरी बार जापान में एशियाई खेलों की मेजबानी हुई। प्रमुख आयोजन 16 दिनों की गहन विश्व स्तरीय प्रतियोगिताओं में आयोजित किया गया था। इसमें 71 खेल उद्घाटन उद्घुष्टता के भव्य प्रदर्शन में 43 खेल और 17 खेल विधाएं शामिल थे। खेलों के दौरान 469 रोमांचक आयोजनों में कुल 1,407 पदक प्रदान किए गए। एशियाई खेलों के साथ-साथ, जापान 18 अक्टूबर से 24 अक्टूबर, 2026 तक आइची-नागोया में 5वें एशियाई पैरा खेलों की मेजबानी भी कर रहा है। जापान ने पहली बार पैरा खेलों की मेजबानी की है।

एशियाई खेल 2026
प्रतीक को समझना

आधिकारिक प्रतीक का रंग और डिजाइन स्थानीय और सांस्कृतिक महत्व को खेल का गतिशीलता के साथ जोड़ता है। जबकि वक्र जीवंतता का प्रतिनिधित्व करता है, बैंगनी, सुनहरी और हरी केंद्र रेखाएं लोगों को एकजुट करने और चमकीले लाल सूरज की ओर बढ़ने को छवि पैदा करती हैं - जो एशिया ओलंपिक परिषद (ओसीए) आधिकारिक प्रतीक है। बैंगनी आइची के प्रीफेक्चुरल लाल, आरिस का प्रतिनिधित्व करता है; सोना किंशाची का प्रतीक है, जो नागोया कैसल के प्रतिष्ठित गोल्डन टाइगर-फिफ्ट छत के गहने हैं; और हरा रंग दार्शना-नागोया की मजबूत पर्यावरणीय चेतना को दर्शाता है, जिसे एक्सपो 2005 आइची, सीओपी10 और ईएसडी पर यूनेस्को विश्व सम्मेलन जैसे ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से बढ़ावा दिया गया है। प्रतीक में एशिया, आइची और नागोया के पहले अक्षर शामिल हैं: ए को बैंगनी वक्र और केंद्र रेखा में, पन बैंगनी और सोने में दर्शाया गया है।

एशियाई खेल 2026
आधिकारिक शुभंकर

20वें एशियाई खेलों का शुभंकर होनोहोन, एथलीटों के उग्र जूनून का प्रतिनिधित्व करता है। यह नाम जापानी शब्द 'होनोहो' से लिया गया है, जो लौ के लिए जापानी शब्द की उत्पत्ति से जुड़ा है। इसका डिज़ाइन शचिहोको से प्रेरित है, जो नागोया कैसल के विशिष्ट प्रतीकों में से एक है और आइची-नागोया के रक्षक देवता हैं।

1951 में पहला एशियाई खेल
भारत की संस्थापक भूमिका

एशियाई खेलों के साथ भारत का संबंध बहुत शुरुआत से है, जब पहला एशियाई खेल 1951 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। यह एशियाई देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के प्रयासों की पृष्ठभूमि के खिलाफ भी किया गया था, जिसमें एशिया के कई क्षेत्रों को हाल ही में उपनिवेशवाद से मुक्त किया गया था। एशियाई खेलों के पहले प्रतियोगिता का विचार भारत द्वारा एकता प्रदर्शित करने और एशियाई देशों के बीच संबंधों के पुनर्निर्माण के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जिन्हें युद्ध ने तोड़ दिया था। एशियाई खेलों का विकास सबसे पहले भारत की अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के सदस्य प्र.जी.डी. सांथोबा

आइची-नागोया 2026 एशियाई पैरा खेलों में भारत की भागीदारी

में दिया गया, और इसे एशियाई खेल कहने का निर्णय लिया गया था। उद्घाटन एशियाई खेल मार्च, 1951 में नई दिल्ली में आयोजित किए गए थे। राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उच्च नेशनल स्टेडियम में खेलने की घोषणा की। ग्यारह देशों ने उस पहले आयोजन में छह खेलों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए 489 एथलीटों को भेजा। भारत उस वर्ष जापान के बाद पदक तालिका में दूसरे स्थान पर रहा। तब से, खेल एक बड़ा आयोजन बन गया है जो खेल के माध्यम से दोस्ती को बढ़ावा देता है और विविधता को पहचानकर विश्व शांति में योगदान देता है।

आइची-नागोया 2026
में भारतीय दल

भारत ने एशियाई खेल 2026 में अपने अब तक के सबसे बड़े बहु-खेल प्रतियोगिताओं में से एक को मैदान में उतारा, जिसमें 36 खेल स्पर्धाओं में 501 एथलीट दल शामिल थे। दल में 300 से अधिक एथलीट एशियाई खेलों में पदार्पण कर रहे थे। टीम के प्रस्थान से पहले 8 सितंबर, 2026 को नई दिल्ली में एक भव्य विदाई समारोह आयोजित किया गया।

केंद्रीय मंत्री डॉ. मांडवीया, भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष डॉ. पी.टी. उषा और शेफरू डी मिशन सहदेव यादव ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और आधिकारिक दल को जर्सी का अनावरण किया गया। भारतीय ओलंपिक संघ ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

आइची-नागोया 2026 में
भारत ने स्वर्ण पदक जीता

2026 एशियाई खेलों में भारत के अभियान को 21 स्वर्ण पदक से उज्जगर किया गया, जो सटीक स्पर्धाओं और टीम खेलों में मजबूत प्रदर्शन से जुड़ा था। तीनों देशों ने शूटिंग, मुक्केबाजी द्वारा समर्थित 5 खिताबों के साथ स्वर्ण तालिका में सबसे आगे रहा, जिसमें प्रत्येक ने 3 स्वर्ण पदक जीते। टीम खेलों में भारत ने क्रिकेट, हॉकी और कबड्डी में एक खिताब गोल्ड रश को अंजाम दिया, प्रत्येक खेल में 2 स्वर्ण पदक हासिल किए। असाधारण प्रदर्शन में पुरुष क्रिकेट टीम ने फ़इनल में पाकिस्तान को 19 रनों से हराया, पुरुष हॉकी टीम ने मलेशिया पर 5-0 की शानदार जीत के साथ अपना महाद्वीपीय खिताब बरकरार रखा और पुरुषों और महिलाओं दोनों की कबड्डी प्रतियोगिताओं में दोहरी स्वर्ण जीत हासिल की। इसके अलावा कुश्ती (2), एथलेटिक्स (1) और गोल्फ (1) में स्वर्ण पदक ने भारत के कुल 21 पदकों को लाया, जो महाद्वीपीय खेल क्षेत्र में देश के मजबूत और विविध प्रदर्शन को दर्शाता है।

प्रदेश ओलंपिक संघ भर्ती करेगा सौ कोच

भूपिंदर सिंह

ओलंपिक संघ व सरकार को चाहिए कि वहाँ पर उन खेलों में उच्च प्रदर्शन करनेवाले वाली खेल अकादमियाँ स्थापित की जाएँ। हिमाचल प्रदेश में साईं के धर्मशाला, हमीरपुर व बिलासपुर तथा युनू सेवाएँ एवं खेल विभाग के दो खेल छात्रावास बिलासपुर व ऊना में कुछ चुनिंदा खेलों के लिए कामचलाऊ प्रशिक्षण प्रबंध तो है, मगर उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवाले प्रशिक्षकों की कमी व प्रबंधन में अव्यवस्था साफ देखी जा सकती है। उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले प्रशिक्षक बहुत कम हैं। इस कमी को जल्द ही दूर करना होगा। राज्य ओलंपिक संघ के अध्यक्ष व हमीरपुर के सांसद तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने घोषणा की है कि राज्य ओलंपिक संघ आगामी दिनों भारत में होने वाले राष्ट्रमंडल खेल 2030 व 2036 ओलंपिक की मेजबानी के दृष्टिगत प्रदेश में विभिन्न खेलों के स्तरीय सौ प्रशिक्षक नियुक्त करेगा। खेल राज्य सूची का विषय है, मगर प्रदेश में खेलों का बजट बहुत कम है। प्रदेशवर्त में सीएसआर के धन से ओलंपिक संघ हिमाचल प्रदेश में कैसी सही प्रशिक्षण व्यवस्था बनाता है? भारतीय प्रशिक्षक को पच्चीस से अधिकतम दो लाख रुपए और



विशेष परिस्थितियों में ही आज तक दो बार ही विभागीय अधिकारी निदेशक पद तक पहुँच पाए हैं। उपनिदेशक और कभी कभी सुपुंज निदेशक पद तक विभाग के प्रशिक्षक पहुँच जाते हैं। विभाग के पास आजकल कोई भी उप निदेशक नहीं है, हाँ इस समय सुपुंज निदेशक के पद पर एक प्रशासनिक अधिकारी का नियुक्ति है। निदेशक आईएस अधिकारी है। आजकल हिमाचल प्रदेश युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के पास कोई भी नियमित जिला युवा सेवाएं एवं खेल अधिकारी भी केवल चार ही जिलों में थे, पिछले साल कुछ नियुक्तियाँ हुई हैं। राज्य के शेष जिलों में

कामचलाउ. अधिकारी बिठा रहे हैं। सरकार को चाहिए कि जल्दी ही जिला स्तर पर अधिकारियों व उपनिदेशक के पद पर नियमित पदोन्नति की जाए। लगता है कि सरकार के लिए युवा शक्ति व खेल प्रार्थमिकता पर नहीं है। विभाग में नाम मात्र के प्रशिक्षक हैं। अधिकार खोलों में तो एक नहीं प्रशिक्षक पूरे जिले के लिए उपलब्ध नहीं है। प्रशिक्षक बनने की योग्यता बहुत कठिन है। स्नातक डिग्री के साथ जो प्रतिभागी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हो या तीन बार वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व किया हुआ हो या सांथरीकर प्रशिक्षक स्नातकोत्तर डिग्री के साथ अखिल भारतीय

इंडिया को 2026-27 के लिए 924.35 करोड़ रुपये प्राप्त हुए। इससे पहले, इस योजना में 2021-22 से 2025-26 के लिए 3,790.50 करोड़ रुपये का परिव्यय था। बजट में खेल सामग्री के निर्माण के लिए 500 करोड़ रुपये भी निर्धारित किए गए हैं।

प्रतिभा की शीघ्र पहचान

खेलो इंडिया जुलाई स्तर के खेलों के लिए प्रमुख कार्यक्रम है। जुलाई 2026 तक, इसने 3,167 खेलो इंडिया केंद्र स्थापित किए थे। इसने 3,07 करोड़ रुपये की 349 नई खेल बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को मंजूरी दी है। यह 2,745 खेलो इंडिया एथलीटों को कोचिंग, उपकरण, बिक्री, देखभाल और मासिक भत्ते का समर्थन करता है। 2018 से अब तक 63,000 से अधिक एथलीटों ने खेलो इंडिया गेम्स में भाग लिया है। खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन (कीर्ति) पदक 9 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों में प्रतिभा की पहचान करती है और उनका पोषण करती है। इसके 174 प्रतिभा मूल्यांकन केंद्र निष्पक्ष, योग्यता-आधारित चयन के लिए डेटा प्रवाह का उपयोग करते हैं।

शीर्ष एथलीटों का समर्थन

लक्ष्य ओलंपिक पोइंडियम योजना (टॉप्स) भारत के एथलीटों का समर्थन करती है। यह विदेशी प्रशिक्षण, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं, कोचिंग शिविरों और विशेष उपकरणों के माध्यम से एथलीटों का समर्थन करता है। एथलीटों को 50,000 रुपये का मासिक वजीप मिलता है। विकास समूह में जुनियर एथलीटों को प्रति माह 25,000 रुपये मिलते हैं। अप्रैल 2026 तक, टॉप्स 55 कोर एथलीट, 62 पैरा कोर एथलीटों और 140 डेवलपमेंट एथलीटों का समर्थन करता है; इसके अतिरिक्त, 67 कोर एथलीट हॉकी में हैं। टॉप्स ने ओक्टोब्रो 2020 और पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों में भारत के पदकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा, फिटनेस और निष्पक्ष खेल

इम्प्लमेंट में राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय को स्थापना 2018 में हुई थी। यह खेल विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और कोचिंग में शिक्षा प्रदान करता है। फिट इंडिया मूवमेंट लोगों को फिटनेस को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। संसद ने अगस्त 2025 में राष्ट्रीय खेल शासन विधेयक पारित किया। यह खेल संगठनों को मान्यता देने के लिए एक राष्ट्रीय खेल बोर्ड का प्रावधान करता है। एक राष्ट्रीय खेल न्यायाधिकरण खेल विवादों का निपटारा करेगा।

आइची-नागोया से परे: भारत का लंबा ओलंपिक मार्ग

आइची-नागोया 2026 लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक और उससे आगे की दिशा में भारत के व्यापक रोडमैप के भीतर बैठता है। भारत के पांच सौ से अधिक एथलीटों में से तीन सौ से अधिक इस साल एशियाई खेलों में पदार्पण कर रहे हैं। नवोदित भागीदारी का यह पैमाना आज भारतीय खेल की बढ़ती गहराई और बढ़ती बेंच स्ट्रैंथ को दर्शाता है। सरकार ने देश भर में खेल इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए 36,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश करने वाली दस साल की योजना की भी रूपरेखा तैयार की है। इस निवेश का उद्देश्य 2036 से पहले भारत को वैश्विक खेलों में पत्र मजबूती से स्थापित करना है। खेल मंत्रालय ने संघों, राज्यों और अन्य हितधारकों को शामिल करते हुए एक समन्वित 360-डिग्र्री दृष्टिकोण का आदान किया है। आइची-नागोया में भारत का 85 पदक अभियान, जिसमें 21 स्वर्ण पदक शामिल हैं, देश की खेल यात्रा में एक और महत्वपूर्ण अध्याय है। पारंपरिक शक्तियों और उपभूत विषयों में मजबूत प्रदर्शन के साथ, इन खेलों ने लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक के लिए भारत की तैयारियों और इसकी दीर्घकालिक खेल महत्वाकांक्षाओं को और गति दी है।

अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में खेलेंगे, उसके बाद राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान में प्रवेश परीक्षा पास कर एक वर्ष के कठिन प्रशिक्षण व शिक्षण के बाद प्रशिक्षक बनना है। सेवा नियमों में एक समय एम. पी. एड के साथ कंडैस कोर्स जो छह माह का होता था, उसे पास किया हुआ प्रशिक्षक के पद के लिए योग्य था, मगर अब ऐसा कोई नियम नहीं है। हर खेल में जिला स्तर पर पांच प्रशिक्षक भी हों तो भी प्रदेश के लिए दो सौ से अधिक प्रशिक्षक चाहिए। इस तरह देखा जाए तो यह खिलाड़ियों के साथ बहुत अन्याय है। प्रशिक्षकों के अभाव में विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड तो बन कर तैयार हैं, मगर उनका न तो सही रखखाव है और न ही उन पर उन सभी का प्रशिक्षण कार्यक्रम हो रहा है। ओलंपिक संघ व सरकार को चाहिए कि वहां पर उन खेलों में उच्च प्रदर्शन करवाने वाली खेल अकादमियां स्थापित की जाएं। हिमाचल प्रदेश में साईं के धर्मशाला, हमीरपुर व बिलासपुर तथा युवा सेवानाए एवं खेल विभाग के दो खेल छात्रावास बिलासपुर व ऊना में कुछ चुनिंदा खेलों के लिए कामचलाउ प्रशिक्षण प्रबंध तो है, मगर उत्कृष्ट प्रदर्शन करवाने वाले साफ़देखी की कमी व प्रबंधन में अव्यवस्था साफ़देखी जा सकती है।

क्षपणासार ग्रंथ पर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी में गहन ज्ञानमंथन

■ देशभर के विद्वानों ने कर्मक्षय, ध्यान एवं आत्मशुद्धि के सिद्धांतों पर किया चिंतन

छत्रपति संभाजीनगर (विश्व परिवार)। परमपूज्य उच्चारणाचार्या श्री विनम्रसागरजी महाराज के मंगलमय सान्निध्य में श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत, पार्श्वनाथ मंदिर की ओर से हीराकाका प्रांगण स्थित श्री आचार्य गुप्तिनंदीजी गुरुदेव सभागृह में आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी के दूसरे दिन ‘क्षपणासार’ ग्रंथ में वर्णित गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धांतों पर विद्वानों ने गहन चिंतन-मंथन किया।

संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में कर्म, आत्मा, ध्यान, कर्मक्षय एवं आत्मशुद्धि जैसे विषयों पर देशभर से आए विद्वानों ने अपने शोधपरक एवं अभ्यासपूर्ण लेख प्रस्तुत किए। बाल ब्रह्मचारिणी प्राची दीदी ने कहा कि प्रत्येक संसारी जीव कर्मों से संयुक्त है, जबकि शुद्ध जीव कर्मरहित होता है। कर्मबंधन से मुक्त होना आत्मा के आध्यात्मिक विकास की उच्च अवस्था है। कर्मों का आवरण दूर होने के बाद आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है।

श्रमणी आर्थिका विमलश्री माताजी ने



ध्यान के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि धर्मध्यान और शुक्लध्यान के माध्यम से क्षपक श्रेणी में जीव कर्मों की क्षापणा करता है। कर्मों के क्षय के साथ जीव अपने शुद्ध स्वरूप की ओर आगे बढ़ता हुआ अंततः जिनत्व की दिशा में अग्रसर होता है।

आत्मा और कर्म के संबंध को स्पष्ट करते हुए उन्होंने निर्मल सूर्य के प्रकाश का

उदाहरण दिया। जिस प्रकार धूल के कण अथवा बादल सूर्य के प्रकाश को ढक देते हैं, उसी प्रकार कर्म आत्मा के अनंत ज्ञानस्वरूप को आच्छादित कर देते हैं। सूर्य का प्रकाश स्वभावतः निर्मल होता है, उसी प्रकार आत्मा भी स्वभाव से शुद्ध एवं निर्मल है; लेकिन कर्मों का आवरण उसके वास्तविक स्वरूप के प्रकटीकरण में बाधक

बनता है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए 30 से अधिक विद्वानों एवं सरस्वतीपुत्रों ने विभिन्न विषयों पर अपने अध्ययनपूर्ण शोधपत्र प्रस्तुत किए। उन्होंने जिनवाणी के गूढ़ तत्त्वज्ञान को सरल, तात्त्विक एवं अध्ययनपूर्ण शैली में उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष रखा। इससे श्रावक-श्राविकाओं को कर्म सिद्धांत, आत्मस्वरूप एवं आध्यात्मिक साधना के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने का अवसर मिला।

‘क्षपणासार’ जैसे गहन आध्यात्मिक ग्रंथ का अध्ययन, चिंतन एवं मनन कर उसमें निहित तत्त्वज्ञान को समाज तक पहुंचाना इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य है। आचार्यश्री का मंगलमय सान्निध्य तथा देशभर से आए विद्वानों का ज्ञानमंथन छत्रपति संभाजीनगर में आयोजित इस संगोष्ठी को जिनवाणी की ज्ञानपरंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बना रहा है।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाजबन्धु उपस्थित रहे। यह जानकारी प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पियुष कासलीवाल ने दी।

शोक सभा में धर्मश्रेष्ठी कस्तूरीबाई जैन को श्रद्धांजलि समर्पित की

ललितपुर (विश्व परिवार)। दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरि प्रबंध समिति की एक शोक सभा में समाजसेवी अनिल कुमार अटल जैन नयाखड़ा वालों की पुजनीय माता जी एवं अंशुल विधान पियूष निषिद्ध अनुदेश जैन की दादी धर्मश्रेष्ठी श्रीमती कस्तूरी बाई जैन के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। वक्ताओं ने उनके आदर्श जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला एवं 2 मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए पारस प्रभु से कामना की। इस मौके पर पं. विनोद कुमार शास्त्री, क्षेत्र अध्यक्ष ज्ञानचंद जैन, मंत्री जयकुमार जैन, कोषाध्यक्ष जैन पन्ना, संयुक्त मंत्री विकास भंडारी, उपमंत्री आकाश चौधरी, ऑडिटर पंकज भंडारी अजय जैन,

उत्तमचंद्र, विजय कुमार, आनंद जैन, संदीप जैन, संतोष कुमार, सुदर्शन जैन, सिंघई अभय कुमार, जयकुमार जैन, सुरेश सिंघई, आशीष जैन, दानाशाह, धर्मद कुमार, आदेश जैन, प्रदीप कुमार, सोनल जैन, सनत कुमार, अनिल चौधरी, डॉ. महेंद्र, देवेंद्र बसार, कमलेश सिर्सि, प्रीतेश पवैया, अमित जैन, अभिषेक मिठया, शैलेन्द्र जैन, सौरभ कड़ेसरा, अमित जैन पिंटू, जितेंद्र सिंघई, अभिषेक जैन, वीरेंद्र कुमार, सुनील जैन, अरविन्द कुमार, अचान जैन, ऋषभ कुमार, गौरव विरथा, नमन जैन आदि ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित की। वहीं वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर तालबेहट समिति, भारतीय जैन मितलन एवं अहिंसा सेवा संगठन ने धर्मश्रेष्ठी कस्तूरीबाई जैन के निधन पर श्रद्धांजलि समर्पित की।



गौमूत्र के वैज्ञानिक उपयोग और जैविक खेती पर एडब्ल्यूबीआई से चर्चा

■ 18 अक्टूबर को रायपुर में खुलेगा मनोहर गौशाला का मुख्य कार्यालय और जैविक प्रशिक्षण केंद्र

रायपुर (विश्व परिवार)। मनोहर गौशाला खैरागढ़ के टुट्टी डॉ. अखिल जैन (पदम डाकलिया) ने नई दिल्ली में भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड (एडब्ल्यूबीआई) के सचिव एम.के. चौहान और सहायक सचिव प्राची जैन से मुलाकात की। इस दौरान गौ संवर्धन-संरक्षण, गौमूत्र के वैज्ञानिक और व्यावहारिक उपयोग, जैविक कृषि तथा प्राकृतिक खेती से जुड़े अनुसंधान पर चर्चा हुई। गौशाला की ओर से अधिकारियों को अब तक किए गए प्रयोगों और अनुसंधान की जानकारी भी दी गई। डॉ. जैन ने बताया कि मनोहर



गौशाला गौसेवा और जीवदया के साथ गौ आधारित जैविक अनुसंधान, प्राकृतिक खेती और किसानों के उपयोग से जुड़े प्रयोग कर रही है। बैठक में विशेष रूप से गौमूत्र आधारित अनुसंधान और इसके कृषि सहित अन्य क्षेत्रों में उपयोग की संभावनाओं पर चर्चा की गई। इस दौरान गौशाला द्वारा प्रकाशित पुस्तक ‘गाय एक

अनुसंधान’ भी अधिकारियों को भेंट की गई। इसमें गाय से जुड़े विभिन्न अनुसंधान और विषयों को संकलित किया गया है। डॉ. जैन ने दोनों अधिकारियों को 18 अक्टूबर को रायपुर में होने वाले मनोहर गौशाला के मुख्य कार्यालय एवं जैविक प्रशिक्षण केंद्र के शुभारंभ समारोह के लिए आमंत्रित भी किया।

कमिश्नर बस्तर डोमन सिंह ने दिव्यांग शिविर में दिव्यांगजनों से रूबरू होकर उनका हौसला बढ़ाया

जगदलपुर (विश्व परिवार)। कमिश्नर बस्तर श्री डोमन सिंह ने बुधवार को स्थानीय धर्मपुरा स्थित क्रीड़ा परिसर में आयोजित संभाग स्तरीय दिव्यांग शिविर का अवलोकन कर दिव्यांगजनों का पंजीयन, स्वास्थ्य जांच तथा उनकी जरूरत के अनुरूप कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण प्रदाय स्थिति के बारे में जानकारी ली और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने इस दौरान शिविर में लाभान्वित हुए दिव्यांगजनों से रूबरू होकर उनका हौसला बढ़ाया और उन्हें शासन की योजनाओं से हरसंभव सहायता उपलब्ध करवाने का भरोसा दिलाया। ज्ञात हो कि स्वयंसेवी संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति एवं एनएसई फंडेशन से प्रायोजित तथा जिला प्रशासन के सहयोग से जगदलपुर के धर्मपुरा स्थित



क्रीड़ा परिसर में गत 05 अक्टूबर से 07 अक्टूबर तक तीन दिवसीय संभाग स्तरीय दिव्यांग शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें बस्तर, कोंडागांव, नारायणपुर और कांकेर जिले के दिव्यांगजनों को उनकी जरूरत के अनुरूप कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण उपलब्ध कराया जा रहा है। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत आयोजित इस शिविर का मुख्य उद्देश्य दिव्यांगजनों को दैनिक जीवन में सुविधा प्रदान करने के साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अभिप्रेरित कर हरसंभव सहयोग प्रदान करना है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास और पुनर्वास के लिए परिषद पूरी तत्परता से करे कार्य : बृजमोहन

■ छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद की कार्यकारिणी बैठक सांसद बृजमोहन अग्रवाल की अध्यक्षता में संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)।

रायपुर सांसद एवं छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद के अध्यक्ष श्री बृजमोहन अग्रवाल की अध्यक्षता में बुधवार को परिषद की राज्य कार्यकारिणी समिति की महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। बैठक में संस्था के आय-व्यय, आगामी योजनाओं, बजट और संचालित बाल देखरेख गृहों की व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की गई।

बैठक को संबोधित करते हुए सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि बाल कल्याण परिषद केवल एक संस्था नहीं, बल्कि विशेष व जरूरतमंद बच्चों को सुरक्षित भविष्य और सम्मानजनक जीवन देने का सशक्त माध्यम है।



उन्होंने संस्थाओं में बच्चों को दी जा रही सुविधाओं, शिक्षा और पुनर्वास कार्यों को और अधिक सुदृढ़ बनाने पर जोर दिया।

इसके साथ ही उन्होंने परिषद को सामाजिक सरोकारों का दायरा बढ़ाते हुए वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल के लिए एक सर्वसुविधायुक्त ‘डे-केयर सेंटर’ शुरू करने का सुझाव भी दिया। बैठक में तय एजेंडे के अनुसार वित्तीय वर्ष 2025-26 की ऑडिट रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया तथा आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 के अनुमानित बजट को सर्वसम्मति से मंजूरी दी गई। आगामी वार्षिक आमसभा के आयोजन हेतु

दीपावली के बाद की तिथि व समय तय करने का अधिकार परिषद के महासचिव को सौंपा गया।

परिषद के विभिन्न प्रकल्पों में रिक पदों की समीक्षा करते हुए उन पर शीघ्र नियमानुसार भर्ती प्रक्रिया पूरी करने पर सहमति बनी। इसके अलावा सांसद एवं विधायक निधि से स्वीकृत निर्माण कार्यों और मिशन वात्सल्य के तहत ‘खुला आश्रय बालक गृह’ के अनुदान प्रस्तावों पर चर्चा की गई। वाणी वाचन एवं बहु-प्रशिक्षण केंद्र के संचालन तथा भारतीय स्टेट बैंक से सीएसआर मद के तहत मिलने वाले सहयोग के प्रस्ताव की भी प्रगति जांची गई।

हावड़ा में भव्य जैनैश्वरी दीक्षाएं व सप्त दिवसीय महामहोत्सव का आयोजन

हावड़ा (विश्व परिवार)। विवेक दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरि प्रबंध समिति की एक शोक सभा में समाजसेवी अनिल कुमार अटल जैन नयाखड़ा वालों की पुजनीय माता जी एवं अंशुल विधान पियूष निषिद्ध अनुदेश जैन की दादी धर्मश्रेष्ठी श्रीमती कस्तूरी बाई जैन के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। वक्ताओं ने उनके आदर्श जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला एवं 2 मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए पारस प्रभु से कामना की। इस मौके पर पं. विनोद कुमार शास्त्री, क्षेत्र अध्यक्ष ज्ञानचंद जैन, मंत्री जयकुमार जैन, कोषाध्यक्ष जैन पन्ना, संयुक्त मंत्री विकास भंडारी, उपमंत्री आकाश चौधरी, ऑडिटर पंकज भंडारी अजय जैन,

दिन दोपहर 1 बजे परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महामुनिराज के 38वें मुनि दीक्षा दिवस महोत्सव एवं भव्य जैनैश्वरी मुनि दीक्षा का आयोजन होगा। इसी दिन शाम 6:30 बजे आचार्य श्री के आदर्श जीवन पर आधारित मनोहारी नाटिका ‘शिवपथ का आरोही’ का मंचन किया जाएगा। 12 अक्टूबर को प्रातः 7 बजे भव्य भगवती जैनैश्वरी दीक्षा एवं



नव दीक्षित मुनिराजों की पारणा तथा 13 अक्टूबर को प्रातः 8:30 बजे नव दीक्षित मुनिराजों की पारणा का कार्यक्रम होगा। आयोजकों के अनुसार यह महामहोत्सव त्याग, संयम, तप और धर्म के प्रति समर्पण का प्रेरणादायी अवसर होगा। देशभर से श्रद्धालुओं के हावड़ा पहुंचने की संभावना है। कार्यक्रम के आयोजक श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति, कोलकाता, संयोजक समस्त दिगम्बर जैन समाज हावड़ा दक्षिण तथा का निवेदक सकल दिगम्बर जैन समाज कोलकाता एवं वृहत्तर कोलकाता हैं।

नव दीक्षित मुनिराजों की पारणा तथा 13 अक्टूबर को प्रातः 8:30 बजे नव दीक्षित मुनिराजों की पारणा का कार्यक्रम होगा। आयोजकों के अनुसार यह महामहोत्सव त्याग, संयम, तप और धर्म के प्रति समर्पण का प्रेरणादायी अवसर होगा। देशभर से श्रद्धालुओं के हावड़ा पहुंचने की संभावना है। कार्यक्रम के आयोजक श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति, कोलकाता, संयोजक समस्त दिगम्बर जैन समाज हावड़ा दक्षिण तथा का निवेदक सकल दिगम्बर जैन समाज कोलकाता एवं वृहत्तर कोलकाता हैं।

सेवा संकल्प अभियान के तहत चरौदा में रोपे गए 300 पौधे, ग्रामीणों ने लिया हरियाली का संकल्प

आरंग (विश्व परिवार)। बुधवार को सेवा संकल्प अभियान के तहत सरपंच देवशरण धीवर, ग्राम पंचायत चरौदा के नेतृत्व में शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा में वृहत रूप से पौधारोपण किया गया। जिसमें अशोक, बादाम, जाम, करंज, अमरूद, कटहल, बांस सहित सभी प्रकार के 300 पौधों का रोपण किया गया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सीआरपीएफ कैप भिलाई के जवान, पंच, स्कूली बच्चे, शिक्षक-शिक्षिका, महिला संगठन, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन, रोजगार सहायिका सहित ग्रामीणों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इस दौरान बच्चों को संबोधित करते हुए सरपंच देवशरण धीवर ने कोविड काल का जिक्र करते



हुए कहा कि कोविड-19 हम सबको सबक देकर गया है। पौधारोपण और उनका संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने चरौदा को हरा-भरा बनाने के लिए सभी नागरिकों और बच्चों से अपील की। साथ ही सीआरपीएफका आभार जताया। वहीं सीआरपीएफ के जवानों ने भी बच्चों को ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का संचालन शिक्षक महेन्द्र पटेल ने किया। पौधारोपण में महिला संगठन अध्यक्ष शकुन चंद्राकर, सरपंच प्रतिनिधि संतोष कोसरिया, प्रेमलाल साहू, कन्हैया धीवर, दीपक फरिका, अमित साहू, रोजगार सहायिका उमा साहू, संस्था प्रधान के.के. परमाल सहित समस्त शिक्षक शिक्षिका, बच्चों और महिलाओं ने भाग लिया।

राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक पर प्रशिक्षण आयोजित

खैरागढ़ (विश्व परिवार)। स्वास्थ्य संस्थानों में सेवाओं की गुणवत्ता सुदृढ़ करने की दिशा में जिला स्वास्थ्य विभाग, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई द्वारा युनिसेफ के तकनीकी सहयोग से 6 अक्टूबर 2026 को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक पर जिला स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अनिल कुमार शुक्ल के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रशिक्षण में चिकित्सा अधिकारी, ग्रामीण चिकित्सा सहायक, सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी एवं स्टुटाप नर्स सहित कुल 79 स्वास्थ्यकर्मियों ने सहभागिता की।

प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को हज़र के प्रमुख मानकों, स्वास्थ्य संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण सेवाएं सुनिश्चित करने की



प्रक्रिया और मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान मरीज अधिकार, संक्रमण नियंत्रण, आउटकम इंडिकेटर, गुणवत्ता उपकरण एवं गुणवत्ता प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा की गई।

मरीज अधिकार एवं संक्रमण नियंत्रण: प्रतिभागियों को बताया गया कि प्रत्येक मरीज को सम्मानजनक व्यवहार, गोपनीयता और सुरक्षित उपचार का अधिकार है। साथ ही स्वास्थ्य संस्थानों में संक्रमण नियंत्रण की मानक प्रक्रियाओं का पालन कर

मरीजों एवं स्वास्थ्यकर्मियों को सुरक्षित रखने पर जोर दिया गया। आउटकम इंडिकेटर: सेवाओं की गुणवत्ता का आकलन करने और सुधार की दिशा तय करने के लिए आउटकम इंडिकेटर के उपयोग एवं नियमित निगरानी के महत्व को समझाया गया।

गुणवत्ता उपकरण एवं प्रबंधन: संस्थानों में कमियों की पहचान कर उनके समाधान हेतु गुणवत्ता उपकरणों के प्रयोग और प्रभावी गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली को अपनाने पर चर्चा की गई। अधिकारियों ने प्रतिभागियों से अपील की कि वे अपने-अपने संस्थानों में NQAS के अनुरूप व्यवस्थाएं सुदृढ़ करें, ताकि जिले के नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण और भरोसेमंद स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें।

यह प्रशिक्षण युनिसेफ छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. गजेन्द्र सिंह ने नेतृत्व एवं सहयोग से आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण को सफल बनाने में श्रीमती सोनल ध्वव जिला कार्यक्रम प्रबंधक, श्री खिलेश साहू जिला डाटा इंडिकेटर और अनंजी टीम का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

डोंगरगढ़ नवरात्रि मेले के लिए रेलवे की अतिरिक्त व्यवस्था

■ 11 से 20 अक्टूबर तक 10 एक्सप्रेस ट्रेनों का अस्थायी ठहराव, स्पेशल ट्रेन भी चलेगी

रायपुर (विश्व परिवार)। नवरात्रि पर्व के दौरान मां बम्लेश्वरी मंदिर डोंगरगढ़ में 11 से 20 अक्टूबर तक मेला लगेगा। इस दौरान बड़ी संख्या में दर्शनार्थियों के डोंगरगढ़ पहुंचने की संभावना को देखते हुए रेलवे प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त व्यवस्था की है। इसके तहत कुछ ट्रेनों का अस्थायी ठहराव, स्पेशल ट्रेन चलाने और कुछ ट्रेनों के परिचालन का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है। रेलवे प्रशासन के अनुसार, कुछ मेमू ट्रेनों को डोंगरगढ़ और रायपुर तक अस्थायी रूप



से विस्तारित किया जाएगा। इसके साथ ही 11 से 20 अक्टूबर तक 10 दूरगामी एक्सप्रेस ट्रेनों का डोंगरगढ़ स्टेशन पर अस्थायी ठहराव भी दिया जाएगा। इन व्यवस्थाओं से नवरात्रि मेले में आने वाले दर्शनार्थियों को आवागमन में सुविधा मिलेगी।

